उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी, लखनऊ की एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल की पहली मीटिंग मोरख़ा 19 अगस्त, 2010 की काररवाई

मोरखा 19 अगस्त, 2010 को डा0 राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के कमेटी रूम में उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फारसी यूनिवर्सिटी की एक्जीक्यूटिव काउन्सिल की पहली मीटिंग श्री अनीस असारी, वाईस चासलर की सदारत में 11 बजे सुबह मुनअकिद (आयोजित) हुई। मीटिंग मे शामिल होने वाले मोअज्जिज अफराद की फहरिस्त मुनसलिक है।

जनाब अनीस असारी, वाइस चासलर ने सबसे पहले उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फारसी यूनिवर्सिटी के कायम करने के लिए वजीर आला मोहतरमा मायावती जी और उनकी कैबिनेट के मेम्बरो खास तौर पर मोहतरम नसीमुद्दीन सिद्दीकी, वजीर पी0डब्ल्यू0डी0 और डा0 राकेश धर त्रिपाठी, वजीर, आला तालीम का शुक्रिया अदा करने के लिए दर्ज जेल (निम्न) रिजोल्यूशन रखा :–

" उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फारसी यूनिवर्सिटी की एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मेम्बरान ने मोरखा 19 अगस्त, 2010 को डा0 राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी के कमेटी रूम में पहली मीटिंग में रिजोल्यूशन पास किया कि इस यूनिवर्सिटी के क़याम से मुल्क में और खास तौर से उ0प्र0 में उर्दू, अरबी, फ़ारसी ज़ुबानों की तरक़्क़ी में बहुत मदद मिलेगी। ये यूनिवर्सिटी उ0प्र0 में सरकारी यूनिवर्सिटियों के सियाक़ (संदर्भ) में तक़रीबन 23 साल के वक़्फ़े के बाद क़ायम की गयी है। वज़ीर आला मोहतरमा कु0 मायावती जी ने जिस ख़ुलूस व दयानतदारी और नेकनीयती से इस यूनिवर्सिटी के क़याम का फ़ैसला किया है और इस को अमल में लाने के ज़रूरी वसायल मुहैया कराये हैं इस के लिए उर्दू, अरबी, फ़ारसी से मोहब्बत रखने वाली लिसानी (भाषायी) अक़लियतें बिल–ख़ुसूस मुसलमान बहुत ही एहसानमन्द महसूस करते हैं और उम्मीद करते हैं कि वज़ीर आला की हिदायत पर यूनिवर्सिटी जल्दी ही इन ज़ुबानों की तालीम के फ़रोग़ में अपना मुतवक़्क़ा (अपेक्षित) किरदार निभाने लगेगी।

इस यूनिवर्सिटी के क़याम में वज़ीर आला के साथ कैबिनेट के कई अहम मेम्बरान बिल–ख़ुसूस मोहतरम नसीमुद्दीन सिद्दीक़ी, वज़ीर पी0डब्ल्यू0डी0 वग़ैरा और डा0 राकेश धर त्रिपाठी, वज़ीर, आला तालीम का भी शुक्रिया अदा करते हैं कि उन्होंने ने शुरू से ही इस यूनिवर्सिटी के क़याम और तरक़्क़ी के लिए मुख़्लिसाना कोशिशें की हैं।

ये भी तय किया गया कि एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मेम्बरान के इस जज़्बए ममनूनियत (कृतज्ञता) से वज़ीर आला और उनके मुतल्लिक़ा (सम्बन्धित) वोज़रा साथियों को बाख़बर कर दिया जाय।"

एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के मेम्बरान ने इस बात पर भी मोहतरमा वज़ीर आला का शुक्रिया अदा किया कि उन्होंने हम लोगों को इस यूनिवर्सिटी की एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल में मेम्बर नामज़द करने के लायक़ समझा।

इस रिजोल्यूशन की ताईद प्रोफेसर नसीर अहमद खॉ, उर्दू प्रोग्राम कोआरडीनेटर, इन्दिरा गांधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी दिल्ली के जरिए की गयी। रिजोल्यूशन इत्तिफाक राय से पास किया गया।

इसी तसलसुल (क्रम) में डा0 चन्द्र विजय चतुर्वेदी, मेम्बर एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने जनाब अनीस अंसारी को यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर बनाये जाने पर मोहतरमा मायावती जी का शुक्रिया अदा करने के लिए दर्ज जेल रिज़ोल्यूशन पेश किया :–

"एक्जीक्यूटिव काउन्सिल के मेम्बरान ये भी महसूस करते हैं कि मोहतरमा वज़ीर आला ने जनाब अनीस अंसारी, साबिक जरई पैदावार कमिश्नर, (पूर्व कृषि उत्पादक आयुक्त) को इस यूनिवर्सिटी का वाइस चांसलर मुन्तखब करके यूनिवर्सिटी के हक़ में जो अच्छा फ़ैसला किया है उस से उनकी हिदायत पर यूनिवर्सिटी की तश्कील (निर्माण) करने और उस को आगे बढ़ाने में जरूरी मदद मिल सकेगी। इसके लिए भी अराकीन मोहतरमा वजीर आला के शुक्रगुज़ार हैं।"

रिज़ोल्यूशन के इस हिस्से की ताईद प्रोफ़ेसर मोहम्मद मियां, वाइस चांसलर, मौलाना आजाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के ज़रिए की गयी। रिज़ोल्यूशन इत्तिफाक राय से पास किया गया।

जनाब अनीस अंसारी, वाइस चांसलर ने मेम्बरान एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल के सामने यूनिवर्सिटी का मुख़्तसर तआरूफ़ पेश किया। उन्होंने बताया कि उ0प्र0 सरकार ने मोहतरम वज़ीर आला कुमारी मायावती जी की तहरीक पर सीतापुर–हरदोई रोड को जोडने वाली 6 लेन की सड़क के किनारे लगभग 30 एकड़ ज़मीन, जो इन्डियन इन्स्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट, लखनऊ के बगल में है, पर उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी क़ायम करने का फ़ैसला पिछले माली साल 2009–10 में किया। इस यूनिवर्सिटी का ख़ास मक़सद ये है कि उर्दू ज़ुबान को इस तरह तरक़्क़ी दी जाय कि समाज का कोई भी शख़्स उर्दू ज़ुबान व अदब में, जिस के साथ अरबी–फ़ारसी अदब और ज़ुबानें भी हैं, अपनी तालीम को ऊँची सतह पर जारी रख सके।

श्री अनीस अंसारी, आई0ए0एस0 (रि0), साबिक़ ज़ेरई पैदावार कमिश्नर, उत्तर प्रदेश की 23 अप्रैल, 2010 को सबसे पहले वाइस चांसलर की हैसियत से तक़र्रुरी की गयी है। श्री विमल किशोर गुप्ता, विशेष सचिव, आला तालीम, उ0प्र0 को अपनी ज़िम्मेदारियों के अलावा रजिस्ट्रार की हैसियत से तैनात किया गया है। श्री राजवर्धन, पी0सी0एस0 (एकाउन्ट्स) को फाइनेन्स आफिसर बनाया गया है। डा0 सैय्यद एजाज़ अली, रीजनल आफिसर, आला तालीम, लखनऊ डिवीज़न को अपने कामों की ज़िम्मेदारियों के साथ–साथ डिप्टी रजिस्ट्रार के ओहदे का काम भी दिया गया है। वाइस चांसलर का दफ़्तर फ़िलहाल इन्दिरा भवन के छठे तल पर आला तालीम काउन्सिल के आफ़िस में क़ायम किया गया है।

इस यूनिवर्सिटी की इमारत तामीर करने के लिए उ0प्र0 निर्माण निगम, जो नीम (अर्द्ध) सरकारी एजेन्सी है, को ज़िम्मेदारी दी गयी है। पिछले माली साल 2009–10 में एक करोड़ रूपये का बजट सरकार ने दिया था। मौजूदा माली साल 2010–11 में 10 करोड़ रूपये का बजट मंजूर किया गया था। इस 11 करोड़ रूपये की रक़म के बरख़िलाफ़

लगभग 24 करोड़ रूपये का खर्च करने की रिपोर्ट निर्माण निगम ने दी है। हुकूमत उत्तर प्रदेश चाहती है कि भाषायी अकलियतों के लिए बनाई गयी इस यूनिवर्सिटी की इमारत की तामीर का काम, जिस पर तकरीबन 250 300 करोड़ रूपये का खर्च आने का अंदाजा है, दिसम्बर, 2011 तक पूरा कर लिया जाय। इसके लिए तकरीबन 150 करोड़ रूपये पहली सप्लीमेन्टरी के बजट के जरिए दिये जाने की दरख्वास्त हुकूमत से की गयी है। इसके अलावा 15 करोड़ रूपये की रकम आला तालीम डिपार्टमेन्ट की बचतों से दिये जाने की भी दरख्वास्त की गयी है।

तारीख 14 जुलाई, 2010 को यूनिवर्सिटी की एक्ज़ीक्यूटिव कौंसिल की तशकील की जा चुकी है जिसमें वाइस चांसलर जनाब अनीस अंसारी के अलावा ये शख्सियतें शामिल की गयी हैं :– 1. प्रोफेसर नसीर अहमद खॉं, सीनियर एडवाइज़र तथा कोआर्डिनेटर, उर्दू प्रोग्राम, इन्दिरा गांधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी, दिल्ली, 2. प्रो0 अब्दुल वदूद अज़हर (रिटायर्ड), फ़ारसी, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली, 3. प्रो0 शब्बीर अहमद, साबिक विभागाध्यक्ष, अरबी, लखनऊ विश्वविद्यालय, 4. मौलाना सईदुर रहमान आज़मी, प्रिन्सिपल, नदवतुल उलमा, लखनऊ, 5. प्रो0 इनाम क़ादिर, क़ानून, कन्ट्रोलर आफ इक्ज़ामिनेशन, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली, 6. प्रो0 मोहम्मद मियां, वाइस चांसलर, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद या उनके प्रतिनिधि, 7. श्री सैयद ज़हीर हुसैन जाफरी, प्रो0 एवं हेड इतिहास विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, 8. प्रो0 ए0के0 सेन गुप्ता, डीन फैकल्टी आफ आर्ट, लखनऊ विश्वविद्यालय, 9. प्रो0 अब्दुल हक़ अंसारी (रिटायर्ड) उर्दू, अरबी, फारसी तथा कम्परेटिव रिलीजन विश्वभारती शान्ति निकेतन, (पं0 बंगाल), दिल्ली, 10. डा0 मज़हर हुसैन, न्यूरोलॉजिस्ट, 2/182 विश्वास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, 11. प्रो0 (डा0) सीमा अलवी, जामिया मिल्लिया इस्लामिया, दिल्ली, 12. डा0 मेराज अहमद, एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़, 13. श्री निहाल रिज़वी, 528, कटरा, बराबंकी, 14. श्री अनवर जलालपुरी, मोहल्ला दलाल टोला, कस्बा जलालपुर, जिला अम्बेडकरनगर, उ0प्र0, 15. डा0 मोहम्मद रफ़ीक़ पुत्र श्री अजीज अहमद, अलीगंज, बांदा, उ0प्र0, 16. श्री मोहम्मद मंसूर अहमद, 6/161, विनीत खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ, 17. श्री बद्री नारायण, जी0बी0 पन्त समाज विज्ञान संस्थान, झूसी, इलाहाबाद, 18. डा0 चन्द्र विजय चतुर्वेदी, प्राचार्य (रिटायर्ड) के0एन0 राजकीय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, ज्ञानपुर, संतरविदासनगर, उ0प्र0।

जनाब अनीस अंसारी, वाइस चांसलर ने यूनिवर्सिटी के अगले क़दम की तफ़सीलात भी रखीं। इसके बाद मौजूद मेम्बरान ने अपने मशवरे और राय दीं जो दर्ज ज़ेल हैं :–

डा0 चन्द्र विजय चतुर्वेदी

- श्री अनीस अंसारी की तजवीज़ों का मैं इस्तेक़बाल करता हूँ।
- गैर भाषायी मज़ामीन (विषय) को भी पढ़ाया जाना चाहिए।
- हिन्दुस्तान की सकाफ़तों (संस्कृति) और भाषाओं का मरकज़ क़ायम किया जाना चाहिए (Centre for Languages & Culture of India)
- उत्तर प्रदेश की अकलियतों को मेन स्ट्रीम में लाने की ज़रूरत है।
- धर्म और राजनीति के बहुत से मरकज़ हैं लेकिन ज़ुबानों का नहीं।

- मैनेजमेन्ट के 5 साल के कोर्स के बजाय कोई दूसरा कोर्स करने के बाद मैनेजमेन्ट का 2 साल का कोर्स रखें।
- लॉ का 5 साल का कोर्स ठीक है।
- एक साल भाषा और साहित्य भी पढ़ना पड़ेगा।
- इन्टरप्रिटर सियाहत (पर्यटन) का बहुत अच्छा बिज़नेस है।
- यूनिवर्सिटी के साथ मदरसों का इल्हाक (सम्बद्ध) करना सही क़दम है।
- इल्हाक के लिए कायमशुदा अकलियती इदारों के लिए एक तारीख़ मुकर्रर कर लें।
- नये इल्हाक के दायरे को बढ़ा कर हिन्दुस्तान कर दें।
- जो अकलियती इदारे पहले से क़ायम हो चुके हैं उनके इल्हाक़ पर फ़ौरन तवज्जो दी जाय।
- नये डिग्री कालेजों के इल्हाक के लिए ज़मानत की रक़म, ज़मीन और बिल्डिंग के मेयार (मापदंड) को कम किया जाय।
- हुकूमते हिन्द ने अकलियती इदारों के लिए माली इमदाद का पैकेज मन्जूर किया है उस से मदद ली जाय।
- अगर कोई हमारे कोर्स को इख़्तियार करता है तो उस की तजदीदकारी (आधुनिकीकरण) करना चाहिए।
- स्कूलों और मदरसों को माडर्नाइज़ करने की ज़रूरत है। उनको मदद और पैकेज देने की ज़रूरत है।
- मदरसों के तालिब इल्मों के लिए ब्रिज कोर्स चलाया जाना चाहिए।
- सभी तालिब इल्मों के लिए उर्दू, अरबी या फ़ारसी का कोर्स पढ़ना लाज़मी रखा जाय।
- बी0काम के साथ बी0बी0ए0 भी चलायें। बी0सी0ए0 को अगले मरहले (चरण) में लें। बी0बी0ए0 भी जोड़ लें।
- इलाहाबाद में अरबी फ़ारसी के मख़्तूतात (पाडुलिपियां) हैं। कई सौ साल पुरानी तस्वीरों की मख़्तूतात हैं उन की हिफ़ाज़त करना ज़रूरी है। उन का तरजुमा भी हिन्दी और अंग्रेज़ी में होना चाहिए।
- सर्वे करवा कर फ़ारसी के मख़्तूतात का तरजुमा करालें। उस का मरकज़ (केन्द्र) बनायें जैसे रज़ा लाइब्रेरी, पब्लिक लाइब्रेरी वगैरा हैं।
- आईडियालॉजी क़ाबिले तारीफ़ है जो अहले इल्म (शिक्षाविदों) को जमा करके बनायी गयी है।

प्रोफ़ेसर मोहम्मद मियां

- वाइस चांसलर की सभी तजवीज़ों से मुत्तफ़िक़ हूँ।
- क़ौमी सतह पर मदरसों का इल्हाक़ मुमकिन नहीं। इस सिलसिले में यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन से जानकारी हासिल कर ली जाय।
- दाख़िलों के लिए उर्दू, अरबी, फ़ारसी ज़ुबान की जानकारी लाज़मी तौर पर रखने की शर्त पर फिर से ग़ौर करने की ज़रूरत है।
- जामिया मिल्लिया इस्लामिया का 6 माह का फ़ासलाती (पत्राचार) कोर्स चल रहा है। उस का तसलसुल (निरन्तर) क़ायम करने पर ग़ौर कर लिया जाय।
- पेशावराना कोर्स को तरजीह देना सही है लेकिन 5 साल का कोर्स फ़ौरन शुरू न करें।
- 3 और 2 साल के कोर्स चलाना चाहिए जो अलग अलग हों।

- अलीगढ मुस्लिम यूनिवर्सिटी की तर्ज पर मसावी कमेटी (Equivalence Committee) बना ली जाय जो तय करे कि कौन से मदरसों के कोर्स यूनिवर्सिटी के जरिए तसलीम (मान्य) किए जाये।
- दूसरी यूनिवर्सिटिया जिन मे ओपेन यूनिवर्सिटी भी शामिल है की मानिन्द इश्तराक (सहयोग) कायम करने के लिए टास्क फोर्स कायम की जाय।
- इदारा (संस्था) जब बनता है तो बहुत एहतियात से आगे बढना चाहिए। बहुत तेजी से बढने मे आगे कोआरडीनेशन मुश्किल होता है। इस से आइंदा वाइस चांसलर के लिए मुश्किल होती है।
- पहले स्ट्रक्चर सोच ले। स्कूल, डिपार्टमेन्ट, सेन्टर का स्ट्रक्चर कायम करना वगैरा।
- उत्तर प्रदेश में उर्दू पढने वालो की तादाद कम होती जा रही है। इस यूनिवर्सिटी से वलवला (जोश) पैदा होगा।
- फासलाती कार्स शुरू जरूर करें। अभी महदूद हद तक करें। स्टडी सेन्टर बनाना पडेगा जिसको एडमिनिस्टर करना मुश्किल है वरना क्वालिटी घट जाएगी।
- ब्रिज कोर्स खुद करायें आउटसोर्स न करायें।
- मदारिस की डिग्रियां एक साल के अंग्रेजी ब्रिज कोर्स के बाद मदरसों के कोर्स को मसावी कर सकते हैं।
- मदारिस से आगे निकलने का मौका देना चाहिए।
- डायरेक्टरेट ऑफ डिस्टेंस एजुकेशन बनायें।

बद्री नारायण

- ये यूनिवर्सिटी एक प्रतीक है हिन्दुस्तानियत का।
- भाषा और संस्कृति को लेकर भारत को समझने में मदद मिलेगी।
- रिसर्च और कम्परेटिव हिन्दुस्तानी लिट्रेचर पर काम हो। हिन्दुस्तानियत को समझा जाय। हिन्दुस्तानी तहज़ीब का मरकज़ क़ायम किया जाय।
- वोकेशनल की फ़िक्र सही है लेकिन बडा सोचें।
- डिजिटल लैब सिर्फ प्रिजर्वेशन मोड में न हो। आर्काइव, रिसर्च, गैलरी हो। बसरी रिश्ता (Visual linkage) ज़रूरी है।
- यूनिवर्सिटी ग्रान्टस कमीशन से तबक़ों की शुमूलियत (समावेश) का मुतालिया (अध्ययन) करने पर ग्रान्ट मिल सकती है।
- ग़ैर लिसानी या ग़ैर भाषायी हाशिये पर पड़े तबक़ात का मुतालिया भी शामिल किया जाय।
- उर्दू, अरबी, फ़ारसी की तालीम दाख़िले के वक़्त लाज़मी न क़रार दी जाय ताकि ग़ैर उर्दूदां तबक़ा भी दाख़िला पा सके।
- मग़रिबी मुमालिक (पश्चिमी देशों) की यूनिवर्सिटी से भी इश्तराक क़ायम किया जाय।
- यू0जी0सी0, तसव्वुरात (परिकल्पना) और तकनीक पर मौज़ूआती (विषयगत) वर्कशाप करायी जाय।
- मारजिनेलिटी को खत्म करने की कोशिश कर रहे हैं। जो ज़ुबानें मार्जिन पर हैं उन्हें सपोर्ट करें।
- नोमैडिक्स (ख़ानाबदोश) को भी जोड़ सकते हैं।
- पब्लिकेशन भी हो।

- सियाहत (भाषा ज्ञान) से जरूर जोड़े, कोर्स बनाया जाय।
- दूसरी जगह के लिए भी भाषा कोर्स बनाया जाय।
- लिसानियात एक बड़े कारपोरेट की शक्ल ले रहा है। मिडिल ईस्ट और जहां उर्दू, अरबी, फारसी पर काम हो रहा है उससे जुड़ें।
- वर्कशाप हो।
- वाइस चांसलर की तजवीजे ठीक है। मैं भी मुत्तफिक हूँ।

प्रोफेसर नसीर अहमद खाँ

- अनीस अंसारी साहब ने जो मुस्तकबिल (भविष्य) के लिए तजवीजें पेश की हैं मैं उनसे मुत्तफिक हूँ।
- अदब की जरूरत नहीं है। इसके लिए बहुत सी यूनिवर्सिटी हैं। जुबान पर तवज्जो देने की जरूरत है।
- हिन्दुस्तानी अदब पर तकाबुली मुतालिया (तुलनात्मक अध्ययन) का मरकज़ क़ायम करने की तजवीज़ मुनासिब है।
- बी०सी०ए०, बी०काम, ट्रान्सलेटर, इन्टरप्रीटर उर्दू में भी हो।
- इन्दिरा गांधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी से इश्तराक ज़रूर क़ायम किया जाय। उनके पास 335 पेशावराना कोर्सेज़ चल रहे हैं उनमें से 50 कोर्स तरजीही तौर पर लिए जायें।
- तहक़ीक़ पर मबनी (शोध आधारित) जुबान की तरक़्क़ी का कोर्स ज़रूर शामिल किया जाय।
- उर्दू को इस क़ाबिल बनाया जाय जो तमाम चीज़ें झेल सके।
- एडवांस उर्दू रिसर्च इन्सटीट्यूट क़ायम करना चाहिए।
- संस्कृत के बिलमुक़ाबिल उर्दू करोड़ों लोग बोलते हैं। उर्दू ज़िन्दा है।
- कलील मुद्दती (अल्पकालीन) कोर्सेज़ शुरू किए जायें।
- जुबान की तरक़्क़ी के लिए रिसर्च की सतह पर कोर्स शुरू किए जायें।
- पेशावराना कोर्सेज़ चलाये जायें।
- मदरसे के तालिब इल्म बेहद ज़हीन हैं। मदरसों पर फ़ोकस करना चाहिए।
- मदरसे के तालिब इल्मों के लिए उर्दू कोर्स (6 माह का) भी शुरू किया जा सकता है। साढ़े चार साल में मदरसे के तालिब इल्म डिग्री हासिल कर सकते है।
- ख़त्ताती (कैलिग्राफ़ी) का फ़न ख़त्म हो रहा है। तुग़रा नवीसी का फ़न ख़त्म है। वो हमारा सक़ाफ़ती सरमाया है। गोल्डेन ट्रेज़र को ज़ाया न होने दें। इसके लिए एक कोर्स करें जिससे ये फ़न ज़िन्दा रह सकें।
- लाखों किताबें पड़ी हैं जिनमें दीमक लग रही है। यूनेस्को से माली इमदाद ली जा सकती है।
- सोशल कल्चरल इन्सटीट्यूशन जैसे मुशायरा, दास्तानगोई वग़ैरा को बचाने की ज़रूरत है। इनके जरिए उर्दू का फ़रोग हुआ है।
- उर्दू रस्मे खत सिखाने की ज़रूरत है।

निहाल रिज़वी

- वाइस चांसलर की सभी तजवीजें काबिले कुबूल हैं।
- यहां के तालिब इल्म बाहर जाकर रोजगार से जुड़ें।
- लैब मे स्टडी करना अलग है, मौके पर जाकर स्टडी करना अलग है।
- उर्दू, अरबी, फारसी के एक एक माहिर ईरान, जामिया अजहर, जामिया मदीना मुनव्वरा जाकर मौके पर देखें।

प्रोफ़ेसर अब्दुल वदूद अज़हर

- जुबानों के मुतालिए के लिए जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी एक माडल है।
- स्पेनिश को जरूर रखें। इसका बहुत बडा मार्केट है। चीनी, जापानी भी शामिल की जाय।
- प्रोफेसर और लेक्चरर की पोस्ट भरिए। एकदम से सारी पोस्ट न भरें। अगर प्रोफ़सर न मिलें तो रीडर रखिए।
- फ़ारसी सबसे ज़्यादा सेक्यूलर जुबान है। हिन्दुस्तान का जितना भी तआरूफ़ फ़ारसी से हुआ वो किसी और जुबान से नहीं हुआ। कोई हिन्दू ग्रन्थ ऐसा नहीं है जिसका तरजुमा फ़ारसी में नहीं है।
- मदरसे के तालिब इल्मों को जुबान की महारत के लिए चुना जा सकता है।
- माडर्न लैंग्वेज की पढ़ाई कम से कम पांच साल करने के बाद दीनियात वग़ैरा पढ़ायें।
- लैंग्वेज लैब बनायें। जुबान का तलफ़्फ़ुज़ बहुत अहम है।
- एक या दो साल का इन्टरप्रीटर का कोर्स ज़रूर हो।
- इन्दिरा गांधी आर्ट एण्ड कल्चर सेन्टर में मिशन फ़ार प्रिज़र्वेशन ऑफ़ परशियन लैंग्वेज है।
- ईरानी एम्बेसी के मरकज़ नूर में 25000 मख़्तूतात जो हिन्दुस्तान में मौजूद हैं उनकी माइक्रोफ़िल्म बनायी गयी है।
- हरबल मेडिसिन पूरी दुनिया में मंजूरशुदा है। तिब्बे यूनानी कोर्स (5 साल या कम) बहुत ज़रूरी है।
- तक़ाबुली मुतालिए के लिए फ़ारसी की अहमियत है। वाहिद जुबान है जिसने सबसे लिया है। तरजुमे की बहुत पुरानी रवायत है।
- वस्त (मध्य) एशियाई मुमालिक भी फ़ारसी का इस्तेमाल करते हैं।
- ईरान हर तरह मदद करेगा। असातज़ा (शिक्षक), किताबें, वज़ीफ़े वग़ैरा भी मुहैय्या करायेगा।
- मदरसे के लिए सेल बनाया जाय। हर मदरसे के बारे में जानकारी ली जाय और मदद की जाय।
- तक़ाबुली अदब ज़रूरी है।
- वाइस चांसलर की तजवीज़ें क़ाबिले क़द्र हैं।

डा0 मोहम्मद रफीक

- यूनिवर्सिटी का लोगो होना चाहिए।
- मुरासलात (पत्राचार) उर्दू में नहीं थे उनको उर्दू में होना चाहिए।
- अनीस असारी साहब ने जो विजन पेश किया है वो विजन बहुत अच्छा है।
- मदरसो को मेन स्ट्रीम मे लायें।
- पेशावराना कोर्सेज को तरजीह दें।
- बहुत जल्दबाजी की जरूरत नही है। शुरूआत में कम कोर्स शुरू करें।
- शुरू मे सहाफत, तरजुमा वगैरा रखे।
- डिजिटल लाइब्रेरी, मख्तूतात वगैरा का प्रोजेक्ट अच्छा है।

प्रोफ़ेसर शब्बीर अहमद

- अनीस अंसारी साहब की तजवीज़ों से मुत्तफ़िक़ हूँ।
- सियाहत को जोडा जाए जो मैनेजमेन्ट से जुड़ा है।
- डिजिटल लाइब्रेरी के साथ बी0एल0आई0एस0सी0, एम0एल0आई0एस0सी0 को कोर्स में जोडा जाय।
- साथ में एक पर्चा अरबी, फारसी का रखा जाय।
- यूनिवर्सिटी कोर्सेज़ के साथ साथ बी0एड कोर्स चलाने को मद्दे नज़र रखा जाय।
- अरबी, फ़ारसी की तदरीस (शिक्षण) की ट्रेनिंग ज़रूरी है।
- कालेज और बी0ए0 की सतह पर फ़ारसी, अरबी के अच्छे तालिब इल्म नहीं मिलते। यूनिवर्सिटी की सतह पर मिल सकते हैं।
- मदरसा बोर्ड की तालीम को पुरकशिश (आकर्षक) बनाने के लिए बी0एड0 शुरू किया जाय।
- अरबी, फ़ारसी के डिपलोमा, सर्टिफ़िकेट कोर्स चलाये जायं, जामिया मिल्लिया इस्लामिया की तर्ज़ पर।
- अरब कल्चर में बी0ए0, एम0ए0 हो।
- मैनेजमेन्ट और कामर्स के साथ एक साल का अरबी बोलचाल का डिपलोमा हो।

अनवर जलालपुरी

- मोहतरमा वज़ीर आला ने मुसलमानों, उर्दू, अरबी, फ़ारसी के लिए बहुत अहम काम किया है। अख़्बारों, टी0वी0, रेडियो के ज़रिए एलान किया जाय। प्रोपैगेन्डा किया जाय यानी हकीकत को आशकार किया जाय।
- ज़ुबान की यकजहती क़ौमी यकजहती (एकता) की ज़मानत है। कौमी यकजहती का वाज़ेह तसव्वुर यहीं आता है। उर्दू, अरबी, फ़ारसी ज़ुबानों के ज़रिए क़ौमी यकजहती होगी।
- 25-30 मुमालिक अरबी बोलने वाले हैं तो ऐसे अफ़राद तैयार करें जो अरबी, अंग्रेज़ी बोल सकें।
- मदरसे के तालिब इल्म के विज़न में फैलाव नहीं होता। बी0ए0 में मदरसे के तालिब इल्म को दाख़िला मिलना चाहिए।

- सम्पूर्णानन्द यूनिवर्सिटी, गुरुकुल कांगड़ी, महात्मा गांधी यूनिवर्सिटी के निसाब (पाठ्यक्रम) को देख लिया जाय।
- कम से कम तिब्बिया कालेज का इन्तिजाम हो।
- अनीस अंसारी साहब की तजवीजे सही हैं।

डा0 मेराज अहमद

- अकलियती इन्टर कालेज को प्रोमोट करना चाहिए।
- अकलियत की तालीम का दायरा वसी किया जाय जिस के लिए यूनिवर्सिटी ऐसे इन्स्टीट्यूट को तलाश करें और उनसे कहें कि आला तालीम के लिए प्रोमोट किया जाय।
- अकलियती इदारों का इल्हाक किया जाय।
- जिन कालेजों में ग्रेजुएट कोर्स चल रहे हैं उन को आगे क्या करना है इस पर रहबरी की जाय।
- तालिब इल्मों को बी0ए0, बी0एस0सी0, बी0काम की ज़रूरत है।
- देही इलाकों के लिए मुरासलाती कोर्स को साथ ले कर चलना चाहिए।
- तकाबुली मुतालिया आज की ज़रूरत है। इस का कानसेप्ट बहुत अच्छा है। कोर्सेज अपने तैयार करें।
- अगले साल से यूनिवर्सिटी का सेशन ज़रूर शुरू किया जाय।
- वाइस चांसलर की राय से मुत्तफ़िक़ हूँ।

डा0 मज़हर हुसैन

- कोर्सेज़ क़लील मुद्दती हों।
- ब्रिज कोर्स जल्द शुरू करना चाहिए ताकि मदरसा या अनरिकगनाईज़्ड जगह से पढ़ने वालों को फ़ायदा मिल सके।
- लैंग्वेज कोर्सेज़ में ऐसे कोर्स भी डिज़ाइन किए जाएं जो ग़ैर उर्दूदॉ के लिए हों।
- टेक्निकल कोर्सेज़ के बारे में तय करना है कि अभी करना है या बाद में।
- बी0एड कोर्स भी ज़रूरी है।

प्रोफ़ेसर सय्यद ज़हीर हुसैन जाफ़री

प्रोफ़ेसर मिडीवल इण्डियन हिस्ट्री और सद्र शोबए तारीख़, दिल्ली यूनिवर्सिटी ने अपनी अदम मौजूदगी के सबब ईमेल के ज़रिए दर्ज ज़ेल मशविरा भेजा है :–

इस यूनिवर्सिटी का क़याम अरबी, फ़ारसी, उर्दू मुतालिया के रिसर्च और तदरीस के मेयार को बढ़ाने के लिए एक तारीख़ी वाक़िया है। हम को अपने बर्रे सग़ीर (उपमहाद्वीप) के हिन्द इस्लामी विरसा पर मरकूज़ (केन्द्रित) करना चाहिए। इन ज़ुबानों की तरक़्क़ी के लिए एक ढांचा बनाने में विज़न की जरूरत है। मैं यक़ीनन इसको एजेन्डे में सबसे ऊपर रखना पसंद करूंगा और हमारे कोर्सेज़ इसी नज़रिए के गिर्द घूमना चाहिए। यूरोपी मुस्तशिरक़ी (Orientalist) रवायत ने हमें रास्ता दिखाया है कि इस को कैसे करना है। ऐसे स्ट्रक्चर,

कोर्सेज को तैयार करने मे मदरसो के फारिगीन और मुस्तशरिकी स्वायत के इश्तराक से बहुत मदद मिलेगी। इस रोशनी मे मेरा मशवरा है कि

1 एक 5 साल का इन्टिग्रेटेड कोर्स ऐसा हो जो बर्रे सगीर हिन्द के स्कालरों के जरिए (अरबी में) मजहब, कानून, अदब और एथिक्स (एख्लाकियात) पर किए गये काम पर मरकूज हो।

2 एक 5 साल का इन्टिग्रेटेड कोर्स ऐसा हो जो बर्रे सगीर हिन्द के स्कालर्स के जरिए (फारसी में) तारीख, एथिक्स (एख्लाकियात), अदब और मजहब पर किए गये काम पर मरकज हो।

(मुन्दरजा बाला (उपरोक्त) निसाब की तफ़सीलात, दाख़िला की अहलियत वग़ैरा तफ़सील से बनाये जा सकते हैं)

अहम तजावीज़

तफ़सील से गौर करने के बाद दर्ज ज़ेल तजावीज़ इत्तिफ़ाक़ राय से अगले क़दम के रूप में मन्जूर की गयीं :-

अगले क़दम

1. यूनिवर्सिटी मे अगले तालीमी साल जुलाई 2011 से कुछ चुने हुए कोर्सेज़ की पढ़ाई शुरू करायी जाएगी। इनमें से कुछ अहम कोर्सेज़ इस तरह हैं:- बी.काम, बी.सी.ए., बी.बी.ए, फ़ारसी और अरबी में ट्रांस्लेटर और इंटरप्रिटर के दो साल के डिप्लोमा कोर्स, हिन्दुस्तानी ज़ुबानों के अदब की कम्पैरेटिव स्टडी, पांच साल का क़ानून का इण्टिग्रेटेड कोर्स, 2 साल एवं 5 साल का इण्टिग्रेटेड मैनेजमेन्ट कोर्स, मास कम्यूनिकेशन और सहाफ़त (पत्रकारिता), सियाहती कोर्स, आयुर्वेद और यूनानी तिब्बी कोर्स।

2. ये यूनिवर्सिटी उ0प्र0 यूनिवर्सिटी ऐक्ट 1973 के तहत क़ायम की गयी है। इस ऐक्ट की दफ़ा-7 में एक नई दफ़ा 7(ख) का इज़ाफ़ा किया गया है जिसमें यह इन्तज़ाम किया गया है कि रियासती हुकूमत के ज़रिए नोटिफ़िकेशन के वसीले से बाइख़्तियार किये जाने पर यह यूनिवर्सिटी आला तालीम मोहैय्या कराने वाले अक़्लियती तालीमी इदारों को इलहाक़ (सम्बद्धता), मदद और सहूलियतें देगी। इस दफ़ा को लागू करने के लिए यूनिवर्सिटी के ज़ाब्तों (Statutes) का ड्राफ़्ट हुकूमत के सामने पेश किया जा चुका है। अक़लियती तालीमी इदारों के इल्हाक़, मदद और सहूलियात देने के काम में तेज़ी लाई जाय।

3. यूनिवर्सिटी में उर्दू, अरबी-फ़ारसी और दूसरी ज़ुबानों की तालीम और रिसर्च के अलावा ऐसे कोर्स चलाये जाने का मंसूबा है जिनके ज़रिए तालिब-इल्मों को तालीम के साथ- साथ बारोज़गार बनाया जा सके। नये कोर्सेज़ जैसे बायोटेक्नोलॉजी, नैनोटेक्नोलॉजी, इन्फ़ार्मेटिक्स साइंसेज़, माहौलियात (पर्यावरण) और लाइफ़ साइंसेज़ वग़ैरह की पढ़ाई का भी इन्तज़ाम किया जाय।

4. चूंकि यूनिवर्सिटी में भाषायी और गैर भाषयी दोनों तरह के कोर्सेज चलाने का मंसूबा है इसलिए मुनासिब होगा कि जो उम्मीदवार किसी भी कोर्स में दाखिला लेना चाहते हों उनके लिए लाजिम हो कि वो हाईस्कूल की सतह पर उर्दू, अरबी या फारसी में से किसी एक जुबान को पढ चुके हों और साथ ही जिस कोर्स में दाखिला लेना चाहते हैं उसमें भी उन्हें इन जुबानों में से किसी एक में इजाफी पर्चा पास करना जरूरी होगा। ऐसा इन्तजाम करने से गैर भाषायी कोर्सेज के साथ मे उर्दू, अरबी या फारसी की तालीम को फरोग देने का असल मकसद भी पूरा होगा।

5. यूनिवर्सिटी में उर्दू, अरबी और फारसी के अलावा हिन्दुस्तानी जुबानों की कम्परेटिव तालीम का स्कूल (School of Comparative Indian Literature) को अमेरिकी स्कूल की तर्ज पर कायम किया जाना मुनासिब होगा। स्कूल ऑफ उर्दू स्टडीज़ के तहत सेन्टर ऑफ कम्परेटिव इण्डियन लिट्रेचर कायम किया जाय जिसके तहत उर्दू और दूसरी हिन्दुस्तानी जुबानों जैसे हिन्दी, कश्मीरी, पंजाबी, सिंधी, मराठी, बंगाली, मलयालम और संस्कृत वग़ैरह के साहित्य का कम्परेटिव मुतालिया शुरू किया जाय। स्पेनी, चीनी, जरमन, फ्रांसीसी और जापानी जुबानों के कोर्स भी शुरू किए जाएं।

6. माडर्न फ़ारसी, अरबी और उर्दू की इत्मीनानबख़्श पढ़ाई यक़ीनी बनाने के लिए इन जुबानों के तलफ़्फ़ुज़ सिखाने के लिए भाषा लेबोरेटरी क़ायम किया जाना ज़रूरी है।

7. यूनिवर्सिटी में हिन्द–इस्लामिक मख़्तूतात (पाण्डुलिपियों) की डिजिटल लाइब्रेरी क़ायम करने की तजवीज़ सही है। इसके ज़रिए रिसर्च करने वालों को इण्टरनेट के वसीले से मख़्तूतात को भुगतान की बुनियाद पर इस्तेमाल करने की सहूलत मिल सकेगी। मख़्तूतात के तरजुमे उर्दू, हिन्दी और अंग्रेज़ी में कराये जायं।

8. अभी यूनिवर्सिटी के पास सिर्फ़ 30 एकड़ ज़मीन है जो काफ़ी नहीं है। सरकार ने 25 एकड़ ज़मीन और हासिल करने की तजवीज़ पर मंज़ूरी दे दी है। आला सतह पर लिए गये फ़ैसले के मुताबिक़ वाइस चांसलर की क़यादत में निर्माण निगम के आला अफ़सरों ने ग्रेटर नोएडा में ज़ेरे तामीर गौतमबुद्ध यूनिवर्सिटी के कैम्पस को 19 जुलाई, 2010 को मौक़े पर देखा। इन अधिकारियों का मशविरा है कि कम से कम 125 एकड़ ज़मीन और हासिल किया जाना ज़रूरी लगता है। इस पर हुकूमत की मंजूरी जल्द हासिल की जाय।

9. यूनिवर्सिटी के ज़रिए ऐसे कोर्सेज़ का इन्तख़ाब किया जाना बेहतर होगा जिनको पढ़ने के बाद तालिब इल्मों को आसानी से बारोज़गार बनाया जा सके। इसलिए पेशावराना (Vocational) कोर्सेज़ को तरजीह दी जायगी।

10. यूनिवर्सिटी के डिपार्टमेन्ट/स्कूलों को आला लियाक़त के मरकज़ (Centre of Excellence) की शक्ल में क़ायम किया जाय और चलाया जाय। इसके लिए दूसरी आला दर्जे की यूनिवर्सिटियों से इश्तराक (Collaboration) क़ायम की जाय।

11. यूनिवर्सिटी के ज़रिए इग्नू (Indira Gandhi National Open University) दिल्ली, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद और अन्नामलई यूनिवर्सिटी चेन्नई की तरह

खतोकिताबत के वसीले से मुरासलाती (पत्राचार) कोर्स और इन्टरनेट के जरिये ऑन लाइन पढ़ाई का इन्तजाम करना चाहिए। मुरासलाती और ऑन लाइन सिस्टम से उर्दू, अरबी और फारसी के नये पढ़ने वालो, जिन्होंने स्कूल की सतह पर ये जुबानें नहीं पढी हैं को भी इन जुबानो को सीखने की सहूलत मिल सकेगी।

12. वाइस चांसलर के आफिस को किसी प्राइवेट इमारत में एक जगह कायम करने से तालिबइल्मों और दूसरे लोगों को आसानी होगी। इसलिए जल्द ही मुनासिब इमारत किराये पर हासिल की जाय।

13. ये फैसला किया जा चुका है कि मोरख़ा 15 जनवरी, 2011 को एडमिनिस्ट्रेटिव ब्लाक और एकेडमिक ब्लाक की दो-दो मंज़िलों और गेस्ट हाउस व वाइस चांसलर लाज का इफ्तिताह मोहतरमा वज़ीर आला के मुबारक हाथों से कराया जाय।

14. सूबे में मदरसों के ज़रिए दसवीं और बारहवीं क्लास तक की पढ़ाई अरबी, फ़ारसी या उर्दू के वसीले से करायी जा रही है। मदरसों के इन कोर्सेज़ को उ0प्र0 हाई स्कूल व इण्टरमीडिएट बोर्ड या सी0बी0एस0ई/आई0सी0एस0ई0 के ज़रिए तसलीम नहीं किया गया है। इसके सबब मदरसों के 10+2 तक की तालीम पाने वाले तालिबइल्मों को डिग्री सतह की पढ़ाई करने के लिए बहुत महदूद रास्ते मिल पाते हैं। ऐसे तालिबइल्मों को आम डिग्री कोर्सेज की पढ़ाई करने की सहूलत देने के लिए एक साल के ब्रिज कोर्स की शुरूआत की जानी चाहिए जिनमें उन मज़मूनों की पढ़ाई करायी जाय जो मदरसों में कोर्स में शामिल नहीं थे। ब्रिज कोर्स पास करने के बाद मदरसे के 10+2 सर्टिफिकेट को आगे की पढ़ाई के लिए तसलीम किया जाय।

दूसरा तरीक़ा यह भी हो सकता है कि मदरसे के 10+2 पास करने वाले तालिबइल्मों को डिग्री सतह की पढ़ाई मुहैय्या कराने के लिए ऐसा दाख़िला टेस्ट शुरू किया जाय जिसमें सभी ज़रूरी मज़मून शामिल हों। दाख़िला टेस्ट पास करने वाले मदरसे के 10+2 वाले तालिबइल्मों को डिग्री सतह के कोर्सेज़ में दाख़िले के लायक़ तसलीम कर लिया जाय।

बजट की मंन्जूरी

मीटिंग में तक़रीबन 1.5 करोड़ रूपये के बजट की तजवीज़ माली साल 2010-11 के इत्तिफ़ाक़ राय से मन्जूर की गयी। चूंकि अभी फ़ाइनेन्स कमेटी की तश्कील नहीं हो सकी है इस लिए एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल ने ज़रूरत के मुताबिक़ एक हेड से दूसरे हेड में मुन्तक़िल करने के लिए वाइस चांसलर को मजाज़ क़रार दिया।

यूनिवर्सिटी की तामीर के मुताल्लिक़ पावर प्वाइंट पेशकश

मेम्बरों की तजवीज़ों और मशवरों के बाद श्री वी0सी0 केसरी, जनरल मैनेजर, उ0प्र0 निर्माण निगम और उनके साथी अफसरों ने यूनिवर्सिटी की तामीर के सिलसिले में तफ़सीलात और नक़्शे वग़ैरा मेम्बरों के सामने पावर प्वाइंट पेशकश की शक्ल में रखे।

मेम्बरो ने यूनिवर्सिटी के नक्शे को सराहा। चार बजे सहपहर मेम्बरों को यूनिवर्सिटी की मकाम पर ले जाने की सहूलत पेश की गयी।

मीटिंग में शरीक होने वाले अराकीन व अफराद वगैरा के लिए शुक्रिया के कलमात उर्दू अरबी फारसी यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार श्री विमल किशोर गुप्ता के जरिए अदा किये गये। श्री गुप्ता ने मेम्बरान के जरिए इस मीटिंग में शरीक होने और काबिल कद्र मशवरे देने के लिए यूनिवर्सिटी की जानिब से शुक्रिया अदा किया। इसके अलावा प्रोफेसर बलराज चौहान, वाइस चांसलर डा0 राम मनोहर लोहिया नेशनल लॉ यूनिवर्सिटी लखनऊ और उनके साथी अफसरों का शुक्रिया अदा किया गया कि उन्होंने मीटिंग अपने कैम्पस में करने के लिए ज़रूरी सहूलतें मुहैया करायीं।

आखिर में एक्ज़ीक्यूटिव काउंसिल के मेम्बरों ने सद्र का शुक्रिया अदा किया।

कुल सचिव
उ0प्र0 उर्दू, अरबी, फारसी विश्वविद्यालय
लखनऊ

29.9.10

(अनीस अंसारी)
वाइस चांसलर
उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी युनिवर्सिटी,
लखनऊ

(अनीस अंसारी)
कुलपति
उ0प्र0 उर्दू अरबी फारसी विश्वविद्यालय
लखनऊ

उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी लखनऊ

की एक्ज़ीक्यूटिव काउन्सिल की पहली मीटिंग मोरख़ा 19 अगस्त, 2010 में शरीक होने वाले मेम्बरान व अफ़सरों की फ़हरिस्त

1. जनाब अनीस अंसारी, वाइस चांसलर, उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी।
2. प्रोफ़ेसर नसीर अहमद ख़ॉं, सीनियर एडवाइज़र तथा कोआर्डिनेटर, उर्दू प्रोग्राम, इन्दिरा गांधी नेशनल ओपेन यूनिवर्सिटी, दिल्ली,
3. प्रो0 अब्दुल वदूद अज़हर (रिटायर्ड), फ़ारसी, जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली,
4. प्रो0 शब्बीर अहमद, साबिक़ विभागाध्यक्ष, अरबी, लखनऊ विश्वविद्यालय,
5. प्रो0 मोहम्मद मियां, वाइस चांसलर, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू विश्वविद्यालय, हैदाराबाद।
6. डा0 मज़हर हुसैन, न्यूरोलॉजिस्ट, 2/182 विश्वास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ,
7. डा0 मेराज अहमद, एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिन्दी विभाग, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़,
8. श्री निहाल रिज़वी, 528, कटरा, बराबंकी,
9. श्री अनवर जलालपुरी, मोहल्ला दलाल टोला, कस्बा जलालपुर, जिला अम्बेडकरनगर, उप्र0,
10. डा0 मोहम्मद रफ़ीक़ पुत्र श्री अज़ीज़ अहमद, अलीगंज, बांदा, उ0प्र0,
11. श्री बद्री नारायण, जी0बी0 पन्त समाज विज्ञान संस्थान, झूसी, इलाहाबाद,
12. डा0 चन्द्र विजय चतुर्वेदी, प्राचार्य (रिटायर्ड) के0एन0 राजकीय पोस्ट ग्रेजुएट कालेज, ज्ञानपुर, संतरविदासनगर, उ0प्र0।
13. श्री विमल किशोर गुप्ता, रजिस्ट्रार, उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी।
14. श्री राज वर्धन, फ़ाइनेन्स अफ़सर, उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी।
15. डा0 एस0ए0 अली, डिप्टी रजिस्ट्रार, उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी।
16. डा0 जी0आर0 यादव, मुल्हिक़ अफ़सर, उ0प्र0 उर्दू, अरबी–फ़ारसी यूनिवर्सिटी।
17. श्री वी0सी0 केसरी, जनरल मैनेजर, उ0प्र0 राजकीय निर्माण निगम।
18. श्री जी0एस0 दीक्षित, परियोजना प्रबन्धक, उ0प्र0 राजकीय निर्माण निगम।
19. श्री राजीव कुमार, वास्तुविद, उ0प्र0 राजकीय निर्माण निगम।

कुल सचिव